विष्णुपुराण में वर्णित विष्णु का महत्व

डॉ0 प्रतिभा मिश्रा

विष्णुपुराण की रचनापरक प्रवृत्ति धर्मोन्मुखी है जिसमें वैष्णव मत का समुचित परिपाक प्राप्त होता है। इसके वर्ण्य– विषयों में विष्णु के आराध्य पक्ष को प्रधानता दी गयी है। इसमें यह प्रदर्शित किया गया है कि विष्णु के स्वरूप में ही विश्व का सृजन, संरक्षण तथा संहरण संन्निहित है तथा उनकी ही भक्ति से मुक्ति संभव है। क्योंकि भक्ति ज्ञान और कर्म की अपेक्षा उत्तम सुलभ तथा सरल है। भक्ति एक ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति भगवत्परायण होकर उसी में अपने चित्त को नियोजित कर अनायास ही समस्त कष्टों को पार कर जाता है। भक्ति सर्वसुलभ है, इसके लिये किसी पात्रता की आवश्यकता नहीं होती व्यक्ति किसी भी जाति, सम्प्रदाय या धर्म से सम्बन्धित हो भक्ति सबको समान भाव से मोक्ष का अधिकारी बना देती है।